राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में अभिव्यक्त संस्कृति

अनिल कुमार (शोधार्थी) *हिंदी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय*

क्या उठाए कदम और आ गई मंजिल
मजा तो तब है के पैरों में कुछ थकान रहे
सफर की हद है वहाँ तक की कुछ निशान रहे
चले चलो की जहाँ तक ये आसमान रहे[1]

1. कविता कोष - राहत इन्दौरी, सफर की हद है वहाँ तक की कुछ निशां रहे

यात्रा का जीवन से अविछिन्न संबंध है आदिकाल से ही मनुष्य यायावर रहा है। प्रकृति का सौंदर्य उसे हमेशा आकर्षित करता है, इसी आकर्षण ने जब अभिव्यक्ति प्राप्त की तब यात्रा साहित्य एक विधा के रूप में विकसित हुआ। विश्व अनंत पथिक महापण्डित राहुल सांकृत्यायन सृष्टी का ऐसा घुमक्कड़ था, जिसने यात्रा स्वयं के आनंद से परे प्रकृति की खोज करने और उसके विविध रूपों को समझने के हेतु की। अपने यात्रा साहित्य के अनुभवों को आत्मसात करते हुए "घुमक्कड़शास्त्र" भी रच डाला, जो भावी जिज्ञासुओं और यायावरों की ज्ञान पिपासा को तृप्त करता रहेगा। जीवन मूल्य, वेशभूषा, त्यौहार, प्रथा-परंपरा और रहन-सहन की झलक किसी भी देश की संस्कृति में देखी जा सकती है, यही उसकी परिचायक होती है। इन सब का सम्मिलित रूप ही किसी स्थान विशेष की संस्कृति कहलाता है। व्यापक रूप से राहुल जी के यात्रा साहित्य में संस्कृति के तीन पक्ष दृष्टिगोचर होते हैं।

- लोक संस्कृति
- भारतीय संस्कृति
- विदेशी संस्कृति

राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में लोक संस्कृति

राहुल जी के यात्रा वृत्तांत में लोकसंस्कृति का सशक्त जीवंत चित्रण है। हिमालय का प्राकृतिक सौंदर्य जहाँ एक ओर उन्हें आकर्षित करता रहा। वहीं उसकी गोद में बसे ग्रामीण जीवन व उनकी संस्कृति उन्हें सदैव ललायित करती रही, अपनी लेखनी में वे उन चित्रों को उकेरते।

पर्वतीय संस्कृति की देवत्व पर अगाध आस्था, त्यौहार, खान-पान, रीति-रिवाज, संस्कार मिठास घोल देती और उस सांस्कृतिक विशेषताओं को सहेजना जटिल कार्य था। संस्कृति के उक्त तत्व विरासत के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी गतिशील बने रहते हैं। "किन्नर देश में, दोजेलिंड परिचय, कुमाऊं, गढ़वाल, जोनसार, देहरादून, हिमाचल अनेक कृतियाँ लोक जीवन की परिचायक हैं। "किन्नर देश में" लोकगीतों, भाषा, देवताओं व पहाड़ी जीवन के उत्सवों का वर्णन है, इसी संदर्भ में राहुल जी कहते हैं- "किन्नर कंठ मधुर है किन्नर गीत मधुर के साथ ही वह अत्यंत सरल और अकृत्रिम है.....जन संगीत में पहाड़ी संगीत मुझे बहुत मधुर मालुम होता है और उसमें भी प्रथम

स्थान में किन्नर संगीत को देता हूँ। "[2]

किन्नर प्रदेश का एक प्रसिद्ध देवी गीत का उदाहरण-

दो गोल्यो दड शोड् माजो कोष्टिड्पे।
देवियों चंडिके, शुम बोर्शड् बाहेर।
वहाँ से वहाँ, कोठी के माझे। [3]

राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति व्यापक स्वरूप में अनेक संस्कृतियों को अपने में समाहित किए हुए है। भारत के विभिन्न प्रांतों की यात्रा करते हुए राहुल जी वहाँ का प्रतिबिंब यात्रा साहित्य में सहेज दिया जो 'अनेकता में एकता' का उदाहरण है। भारतीय समाज की विभिन्न जातियों व वर्गों का उल्लेख "मेरी लदाख यात्राएँ, जोंनसार, देहरादून और गढ़वाल" में किया है।

किन्नर देश में तो हिमाचल की सबसे प्राचीन जाति खस का उल्लेख मिलता है। खान-पान भारतीय संस्कृति में काल खंड में परिवर्तित व संवर्धित होता रहता है, राहुल जी के "मेरी लदाख यात्रा" में पूंछ राज्य के खाद्य पदार्थ का विवरण दिया है। "पैदावार अधिकतर चावलों की है, लोगों का प्रधान खाद्य भी चावल ही है गेहूँ, मक्की आदि अन्न भी होते हैं। जिस तरह कश्मीर में केशर पैदा होती है,उसी तरह पूंछ गुच्छियों के लिए मशहूर है। "[4] किन्नर देश में गरीबों का प्रमुख भोजन खूबानी है। "हिमाचल" कृति में मक्की के सत्तू व मट्ठा का विवरण उनके आहार पद्धति को प्रदर्शित करता है।

खान-पान के साथ वेशभूषा की विविधता व विचित्रता देश की सांस्कृतिक व्यापकता को व्यक्त करती है। "मेरी लदाख यात्रा" में पंजाब, मुल्तान की पोशाकों का विवरण है। सिंधी, पंजाबी समाज में घाघरी व सलवार का प्रचलन है, इससे भिन्न पूंछ राज्य में पायजामा कमीज कोट, स्त्रियों में चूड़ीदार पायजामा ओढ़नी का चलन है। राहुल जी ने कश्मीरी हिंदू-मुस्लिम पोशाकों पर भी प्रकाश डाला है।

नारी का स्थान भारतीय संस्कृति का सर्वोपरि है। नारी समाज प्राचीन संस्कारों, मान्यताओं, रूढ़ियों व प्रथाओं तथा अंधविश्वासों के घेरे में आबद्ध है। समाज में बहुपति विवाह का उल्लेख किया है, राहुल जी ने "किन्नर देश में" भोटांत की स्त्रियों के बारे में बताया है की वे किस प्रकार घर संभालती है अन्य प्रांतों की भाँति यहाँ की नारी परतंत्र नहीं है। इसके विपरीत अल्मोड़ा के अन्य प्रांतों में उनकी दशा चिंतनीय है। पहाड़ी जीवन की दुरूहता के कारण वहाँ पचहत्तर प्रतिशत महिलाएँ आत्महत्या करती है, स्त्रियों के विभिन्न पक्षों का ब्यौरा उनके यात्रा वृत्तांतों में लिखित है।

राहुल जी ने भारत के अनेक मंदिरों, भवनों स्तूपों व राज-प्रसादों को जांचा-परखा। वास्तुकला, नाट्यकला, चित्रकला आदि भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। "घुमक्कड़शास्त्र" में उन्होंने यह स्पष्ट कहा है की यायावर के लिए ललित एवं उपयोगी कलाओं की

2. राहुल सांकृत्यायन; किन्नर देश में पृष्ठ -354
3. राहुल सांकृत्यायन; किन्नर देश में रूपृष्ठ -328
4. राहुल सांकृत्यायन; मेरी लदाख यात्रा पृष्ठ 38

रूचि होना चाहिए। राहुल ने दाक्षिण व उत्तर भारत की संगीतकला, मूर्तिकला को विवेचित किया है।

राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में विदेशी संस्कृति

चीन, जापान, तिब्बत, इरान, रूस व पश्चिम देशों की यात्रा राहुल जी ने की और उनकी सांस्कृतिक विभिन्नताओं को भारतीय संस्कृति से भिन्न पाया जो उनके लिए रोचकता तथ्य था। विदेश प्रवास के उन अनुभूतियों को अपनी कृतियों में स्थान दिया।

इसी संदर्भ में राहुल जी ने "मेरी यूरोप यात्रा" में यहूदी जाती के संबंध में लिखा- "यूरोप के लोग देखतें ही यहूदी को पहचान लेते हैं। यह पहचान है अपेक्षाकृत अधिक ऊँची, लंबी तथा तोतें की ठोर-सी मुड़ी नाक.... यह लोग सूअर के मांस से वैसी ही परहेज करते हैं, जैसे मुसलमान"[5] राहुल जी ने विभिन्न जातियों का तुलनात्मक अध्ययन कर उनकी विभिन्नताओं को बारीकी से प्रस्तुत किया। विदेशी संस्कृतियों में आहार पद्धति का विवरण भी मिलता है, तिब्बती भोजन के संबंध में लिखा हैं- "तिब्बत के लोग शत-प्रतिशत मांसाहारी है..... बड़े घरों में सुखा मांस हमेशा तैयार रहता है। "[6] तिब्बती लोग की मांसाहारप्रियता पर विशेष प्रकाश डाला है।

तिब्बती लोग 'थुक्पा' नामक पदार्थ का सेवन भी करते जो सतु, मूली, आलू, हड्डी का घोल बनाकर बनाया जाता है। पेरिस, चीनी लोगों में चाय की पत्तियों, जापान देश में शराब(मोताई), रूसी लोगों में लप्सा की लोकप्रियता का उल्लेख मिलता है। तिब्बत के दार-चा गाँव की स्त्रियों ने सर्पाकार लद्दाखी सिरोभूषण पि-रिक को पहनने का उल्लेख है। इस प्रकार वहाँ के लोगों की आभूषणप्रियता उल्लेखनीय है। राहुल जी के शब्दों में- "मुसलमानों को छोडकर वहाँ पर्दा प्रथा बिलकुल नहीं हैं। सिंहली स्त्रिया तो इस प्रकार कुर्ती पहनती हैं कि आधा कंधा ऊपर के खुला रहता है। सिर नड;गा पहना तो उनके लिए धर्म सा है"[7] जापानी महिलाएँ अंग्रेजी ढंग का पहनावा रखती थी।

तिब्बती लोगों के आवासीय व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए लिखा है- "चाहे देखने में कितने ही मलीन और असंस्कृत से मालूम होते हो, लेकिन जान पड़ता है, तिब्बती लोगों के खून में कला मिली है। "[8] "चीन में क्या देखा" नामक कृति में चीन मे लकड़ियों का अधिक प्रयोग घर निर्माण में होता था। राहुल जी ने "लंका" में अनुराधपुर और पोलान्नारुव दोनों स्थानों के इमारतों की भिन्नता पर प्रकाश डाला है।

नारी समाज का उल्लेख करते हुए "यात्रा के पन्ने" में व्यक्त किया है की तिब्बत में भिक्षुणियों की संख्या अधिक है, सोवियत रूस में स्पष्ट है कि वहाँ पति की कमाई पर गुजारा करने वाली स्त्रियाँ बहुत कम है। तीनों सेनाओं से लेकर राजनीति में भी स्त्रियों का अधिकार है। इस तरह विभिन्न देशों में नारी समाज का विलक्षण वर्णन प्रस्तुत किया है। विदेशी संस्कृति की कलाओं में उनके धार्मिक आस्थाओं का पता चलता है, तिब्बत के मंदिरों के वर्णन में राहुल जी ने लिखा है- "मुख्य देवालय के खंभे चालीस-पचास हाथ ऊँचे और इतने मोटे हैं कि दो आदमी अपनी बाहों से घेर सकते हैं। "[9] चीनी दंत कला "कामाकुरा" की लोक प्रसिद्ध बुद्ध प्रतिमा के वर्णन में राहुल जी ने जापानी कला का अच्छा परिचय दिया है।

"सोवियत मध्य एशिया" में राहुल जी ने किंग्रिज कला का वर्णन

5. राहुल सांकृत्यायन; मेरी यूरोप यात्रा पृष्ठ-18
6. राहुल सांकृत्यायन; यात्रा के पन्ने पृष्ठ-28
7. राहुल सांकृत्यायन; लंका पृष्ठ-65
8. राहुल सांकृत्यायन; यात्रा के पन्ने पृष्ठ-46
9. राहुल सांकृत्यायन; यात्रा के पन्ने पृष्ठ-38

किया है, धार्मिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। तिब्बत में बौद्ध धर्म, जापान में शिंतो व बोद्ध प्रमुख, रूस में धार्मिक स्वतंत्रता, यूरोप मे इसाई धर्म की प्रधानता है। तिब्बती समाज में मृतक बलि का चलन, उत्सवों में स्त्री पुरुषों का सयुंक्त नृत्य होता है। इन सब का अपने यात्रा साहित्य में बड़े गंभीरतापूर्वक वर्णन किया है।

अंत में हम निष्कर्ष स्वरूप में कह सकते हैं कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन विश्व के हृदय पर उन्मुक्त विचरण करने वाले यायावर थे, जिन्होंने विभिन्न स्थलों को तन्यमता से निहारा, परखा और अपने साहित्य में पूर्ण सजगता व तटस्थ रूप में वर्णित किया। [10] "राहुल जी का यात्रा साहित्य उनकी यात्रा संबंधी गतिविधियों से साक्षात्कार कराने वाला साहित्य है। उन्होंने अपने साहित्य में देश की अस्मिता, संस्कृति आम लोगों के जीवन, वहाँ के रीति-रिवाज, उत्सवों एवं त्यौहार का विशद् विवेचन किया है।"[10]

घुमक्कड़ी मानव-मन की मुक्ति का साधन होने के साथ साथ अपने क्षितिज विस्तार का भी साधन उनके लिए थी। उन्होंने कहा भी था "कमर बाँध लो भावी घुमक्कड़ों, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है।" हिमालयी संस्कृति उनके अंत:लोक में सदैव अंकित रही। राहुल जी हिमालय के दुरूह-से-दुरूह स्थानों का विवरण बड़ी सरलता से कर जातें। भारतीय व विदेशी संस्कृतियों का सांगोपांग चित्र, तुलना आने वाले शोधार्थियों, यायवारों का, ज्ञानियों के लिए वरदान रहेगी। संकीर्णताओं की वीथियों से ऊपर उठकर विश्व संस्कृति का अद्भुत ढांचा खड़ा करना राहुल जी के महापंडितत्व उपाधि को सार्थक करता है।

10. "उत्तरपूर्वांचल" पत्रिका अर्धवार्षिक "राहुल सांकृत्यायन स्मृति अंक" (सिलीगुड़ी) सितम्बर 1993 पृष्ठ -741

लेखक परिचय

अनिल कुमार
(शोधार्थी) हिंदी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)
(मो)-8696687561